डायरी

थानागाजी में सहज शिक्षा केन्द्रों की शुरुआत

❑ सुरजन गुर्जर

लोक जुम्बिश परियोजना के अन्तर्गत ग्रामीण कामकाजी बच्चों के लिए सहज शिक्षा केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं । राजस्थान में संचालित इन सहज शिक्षा केन्द्रों के लिए 5 विकास खण्डों में दिगन्तर अकादमिक मदद प्रदान करने की भूमिका निभा रहा है । 'विमर्श' के प्रवेशांक में ऐसे एक विकास खंड प्रतापगढ़ में भाषा-शिक्षण की तैयारी के लिए किये गये सर्वेक्षण की एक रपट के कुछ अंश प्रस्तुत किये गये थे । इस बार हम इन डायरी अंशों के जरिये अलवर जिले के थानागाजी विकास खंड में सहज शिक्षा केन्द्रों की शुरुआती प्रक्रिया की झलक दे रहे हैं । डायरी में इस प्रक्रिया के जमीनी प्रयास और उन प्रयासों की देहाती पृष्ठभूमि भी प्रतिबिम्बित हो रही है ।

13.11.96

आज की बैठक में 23 में से 21 शिक्षक ही उपस्थित हुए। भैंरु सहाय गुर्जर पत्नी के बीमार होने व रामजी लाल मीणा बच्ची के गुजर जाने के कारण अनुपस्थित रहा । बैठक के आरम्भ में समय पर आने की बात ध्यान दिलाई गई । उसके बाद सरस्वती वन्दना की गई तथा मांझी जी द्वारा सौ में सत्तर आदमी गीत गवाया गया। गीत के बाद निम्न बिन्दुओं पर विचार विमर्श हुआ ।

स्कूल का स्थान चयन हुआ या नहीं - कुछ शिक्षकों ने बताया कि अभी तक उनके गांव में यह तय नहीं हो पाया कि स्कूल किस जगह चलेगा । चर्चा के दौरान निम्न समस्याएं उभर कर आयीं ।

बड़ी लड़कियों का स्कूल न आना - बड़ी लड़कियों को घर वाले ऐसी जगह नहीं भेजना चाहते हैं जहां पर एकान्त हो या बन्द जगह हो ।

किराया मांगना - गांव में सार्वजनिक जगह सिर्फ मन्दिर है और उनमें स्कूल चलाने का समुदाय वाले किराया मांगते हैं । उनका कहना है कि किराये से स्कूल की टूटफूट को सुधारा जा सकेगा ।

गांव की गुटबाजी - एक गुट के व्यक्ति दूसरे गुट के व्यक्ति के मकान में अपने बच्चों को नहीं भेजना चाहते । उनकी मांग अपने गुट के व्यक्ति के यहां स्कूल चलवाने की है । गुटबाजी की वजह से ही आभाला में 17 नवम्बर को 7 बजे गांव वालों की मीटिंग रखी गई ।

स्कूल का समय तय करना - स्कूल कब से कब तक चलेगा, इसके लिए गांव वालों से बातचीत करने व बच्चों से विचार-विमर्श करने का सुझाव दिया गया।

14.11.98

अपरान्ह 3.00 बजे मैंने राजपुरा के लिए प्रस्थान किया, जहां मैं 5 बजे सायं पहुंचा । 5.30 से 7.30 तक राजपुरा मालियों की ढाणी व ब्राम्हणों की ढाणी में सूरजमल के साथ गांव वासियों से बातचीत की । दोनों ढाणियों के लोगों से बातचीत करने पर पाया कि लोग अपने गांव में सहजशाला चलाने को उत्सुक है । उन्होंने 19.11.96 को सांय 6 बजे शाला का उद्घाटन करना तय किया और उद्घाटन के समय गीत गाने व बताशे बांटने की योजना बनायी । बातचीत से लगा कि ये लोग पूरा सहयोग करेंगे ।

15.11.96

प्रात: जल्दी उठने के बाद मैं और साथी सूरजमल ने सुरजनपुर के लिए प्रस्थान किया । वहां पर हम साढे सात बजे पहुंचे । सुरजनपुर में सहजशाला सराधनों की ढाणी में खुलेगी इसलिए वहां पर सहजशाला शिक्षक धीरसिंह गुर्जर से मिले और बातचीत की। धीर सिंह से बातचीत करने पर पता चला कि गांव वालों ने जगह बता दी है, किसी तरह की समस्या नहीं है । पर गांव वालों से बात करने पर उन्होंने जगह का किराया मांगा । लेकिन कुछ बातचीत के पश्चात जगह देने को तैयार हो गये । सुरजनपुर के बाद धीरसिंह, सूरजमल व मैं तीनों साथी गढ़ बसई संकुल केन्द्र गये । जहां पर ममता जी से दोनों साथियों ने नये बच्चों की सूची ली और वापिस प्रस्थान किया।

शाम को मैं सालेटा गया, जहां पर शिक्षिका सुशीला कंवर व शिक्षक किशोरी लाल शर्मा से मिला । सुशीला जी से मैंने समस्याएं जाननी चाहीं, पर उन्होंने कहा कि कोई समस्या नहीं है जगह तय है, 19 नवम्बर को स्कूल का उद्घाटन हो जायेगा ।

किशोरी लाल ने स्थान की समस्या बतायी । गांव वालों ने पहले मन्दिर में शाला चलाने का प्रस्ताव पारित किया था। पर अब कुछ लोग मन्दिर में शाला चलवाने के पक्ष में नहीं है। मीटिंग में बात करने पर एक व्यक्ति के अलावा सभी तैयार हो गये । लेकिन सभा के गर्म माहौल को देखते हुए गांव वालों का एक स्थान पर सर्वसम्मति से सहमत होना मुश्किल लगता है ।

16.11.96

16 नवम्बर को मैं मीणों की ढाणी सालेटा में प्रात: 8 बजे पहुंचा । गांव वालों से बातचीत करने पर पाया कि स्कूल खुलवाने के लिए सभी गांव वाले तैयार हैं लेकिन यहां भी अभी शाला के लिए कोई जगह तय नहीं है । गांव वालों ने 18.11.96 को शाला का स्थान व समय तय करने का भरोसा दिलाया और कहा कि स्थान चयन में कोई समस्या नहीं आयेगी ।

मीणों की ढाणी के बाद में भोपाला, आमला गांव गया, पर दोनों जगह शिक्षक नहीं मिल पाने के कारण कोई बातचीत नहीं हुई।

भोपाला का शिक्षक कैलाश चन्द मीणा बीमार होने के कारण दवाई लेने गया हुआ था, जबकि अभाला का शिक्षक खेतों पर काम करने गया हुआ था ।

17.11.96

4.15 मिनट पर आमला पहुंचा । वहां के शिक्षक हनुमान प्रसाद से बात-चीत करने पर पाया कि सहजशाला के लिए जगह मिल गई है, पर प्रेरक दल की तरफ से समस्या आ सकती है । क्योंकि प्रेरक दल के तीनों सदस्य गांव की एक ही पार्टी से हैं जबकि दूसरी पार्टी से कोई भी सदस्य नहीं है । उस पार्टी का कहना है कि हममें कोई भी योग्य नहीं है क्या, जिसको सदस्य बनाया जा सकता था ? पूरी बातचीत से मेरे को लगा कि प्रेरक दल की तरफ से समस्या शायद कम है । अध्यापक स्वयं पार्टीबाजी में संलग्न है और एक सदस्य के प्रति पूर्वाग्रह रखता है ।

गांव वाले तीन-चार लोगों से बातचीत करके अध्यापक को यह समझाया गया कि आप अपनी स्कूल चालू करें प्रेरक दल अवरोध पैदा करे तब बात करेंगे । आप स्वयं जबरदस्ती समस्या पैदा न करें । उपरोक्त बात-चीत के बाद मैंने थानागाजी के लिए प्रस्थान किया ।

18.11.96

आज सुबह साढ़े आठ बजे नित्यक्रम से निवृत्त होकर डेरा के लिए प्रस्थान किया। 10.30 से 11.30 डेरा में गायत्री जी से बातचीत की जो कि सहज शाला कि शिक्षिका है । गायत्री जी ने बताया कि शाला के लिए जगह उपलब्ध करा दी गई है । पर अभी तक बच्चों की सूची नहीं मिली है, न ही सामान मिला है । उन्हें बालकों की सूची गढ़बसई से लाने के लिए कहा तथा सामान के लिए बताया कि आज मिल जायेगा ।

स्कूल उद्घाटन के लिए गायत्री ने बताया कि मैंने गांव वालों से बात-चीत करली है । सब लोग आने को तैयार हैं। गायत्री जी व उसके बाद दूसरे एक घर में चाय पीने के बाद बाछडी गांव के लिए चला, जहां पर में 12.30 बजे पहुंचा । वहां पर वहां की शिक्षिका अमरी बाई और प्रेरक दल के सदस्य कैलाश चन्द मीणा से बात की । इस गांव के अन्य लोगों से बातचीत की । इस गांव में एक ही जाति के लोग हैं और शिक्षा में इनकी रुचि है । इस गांव की 10-15 लड़किया थानागाजी छात्रावास में रहकर अध्ययन कर रही है और शेष लड़कियों को सहज शाला में पढ़ाना चाहते हैं ।

शाला का स्थान तय हो गया है । समय भी 6.30 से 9.30 तक तय कर लिया गया है पर यहां भी अभी तक सामग्री नहीं पहुंच पायी । अध्यापिका सुबह से सामान का इन्तजार कर रही थी । इस गांव में थोड़ी देर आराम करने के बाद मैं रामपुरिया भाल के लिए रवाना हुआ । रवाना होने से पूर्व गांव वालों से रास्ता पूछ लिया तथा एक किलोमीटर तक आमरी बाई तथा उसकी बहन छोड़ने आई । पर फिर भी दो किलोमीटर जाने के बाद रास्ता भटक गया। भटकते भटकते बणजारों के डेरों के पास पहुंच गया । डेरों में जाने की हिम्मत मैं नही जुटा सका । थोडी दूर चलने पर एक कुआं दिखाई दिया, उस पर कुछ महिलायें खड़ी थी । कुआ ऐसी जगह स्थित था जिसके तीन तरफ पहाड़ियां थी और उन पर घने पेड़ थे। थोड़ा विचार करने के बाद उस कुए पर गया, जहां चार महिलाएं व दो लड़कियां थीं । कुए पर पहुंचते-पहुंचते मैं पसीने से तर-बतर हो चुका था । मेरा चेहरा देखने के बाद एक महिला ने मुझे प्यार से बैठाया और कहा कि भैया कहां जायेगा और कहां से आया है ? यह पूछने के बाद उसने कहा कि भैया रास्ता मैं अभी बताऊंगी पर पहले चाय-पानी पी ले । आग्रह करने पर भी उसने बिना चाय पीये जाने से मना कर दिया । उसका चाय बनाना भी मुश्किल भरा था। बकरी का दूध दोहने बेटी को भेजा, स्वयं ने चुल्हा जलाया और चाय बनायी। उसके प्यार से बोलने व चाय ने मेरी थकान हर ली। चाय के बाद उसने अपनी 13-14 वर्षीय बेटी को मुझे रास्ता दिखाने भेजा, जिसने एक डेढ़ खेत दूर तक जाकर मुझे आम रास्ता बताया । 4.45 पर मैं रामपुरिया माल पहुंचा । यह गांव पहाड़ियों के बीच में स्थित है इसमें गुर्जर जाति के लोग रहते हैं जो शिक्षा के प्रति उदासीन हैं या यों कह लीजिये की वहां विद्यालय नहीं है।

गांव में केवल एक व्यक्ति आठवीं पास है और एक लड़का आठवीं में पढ़ता है । गांववासियों के पास खेती भी बहुत कम है। एक व्यक्ति के पास 10 बीघा से ज्यादा नहीं है । इनका मुख्य व्यवसाय पशुपालन है । बात-चीत के बाद गांव वालों ने बताया कि पहले भी रात को स्कूल चलती थी जो एक-दो दिन चल कर बन्द हो गयी थीं, क्या अब भी ऐसी ही चलेगी ? उन्हें इस स्कूल के चलने का भरोसा दिलाया गया। पर पूरी बात-चीत के बाद भी यह कहा जा सकता है कि इस गांव के बच्चों को स्कूल में लाने के लिए अध्यापक को काफी मशक्कत करनी पड़ेगी और यह बात अध्यापक को समझा दी गई ।

19.11.96

सायं 5 बजे क्यारागांव में सामान पहुंचाने गयी गाड़ी के साथ पहुंचा । वहां पर तीनों शिक्षकों के साथ शालाओं के उद्घाटन की योजना शेयर की । योजना के मुताबिक कोलियों के मुहल्ले की स्कूल का उद्घाटन 6.00 बजे, नीमाड़ागवाड़ा की स्कूल का 7.00 बजे व ब्रजमोहन वाली स्कूल का उद्घाटन 8.00 बजे किया गया । कोलियों के मोहल्ले की स्कूल में 25-30 बच्चे व 30-40 गांव वाले उद्घाटन समारोह में उपस्थित हुए । स्कूल का उद्घाटन गांव के बुजुर्ग व्यक्ति ने बच्चों के रोली का तिलक लगा कर किया । बच्चों के तिलक करने के बाद गांव वालों ने कहा कि हम लोग हमारे बच्चों को नियमित शाला भेजेंगे, पर बीच में पहले की तरह बन्द नहीं होनी चाहिये । उन्हें विश्वास दिलाया गया कि यह विद्यालय नियमित चलेगा और आपका सहयोग रहा तो सतत् चलता रहेगा ।

7.00 बजे नीमाड़ागवाड़ा विद्यालय का उद्घाटन किया गया । इस उद्घाटन समारोह में बच्चे व गांव वाले मिलकर 100-125 व्यक्ति थे । गांव वालों ने बच्चों के तिलक व लच्छा बांधा तथा साथ ही गुड़ भी वितरित किया । यहां पर भी गांव वालों ने पूछा कि पहले की तरह एक दो दिन चलाकर बंद करना हो तो फालतू हुडदंग करने से फायदा नहीं है । इस प्रश्न का इशारा साक्षरता अभियान के दौरान चले कार्यक्रम की ओर था । यहां पर भी गांव वालों को विश्वास दिलाया गया कि आपका सहयोग रहा तो यह विद्यालय नियमित व सतत् चलेगा।

7.45 बजे मीणों के मोहल्ले की सहज शिक्षा शाला का उद्घाटन भी बच्चों के तिलक करके किया गया । तिलक करने के बाद बच्चियों ने ''बहना चैत सके तो चैत जमाना आयो चेतन कौ'' नामक गीत गाया । इस गीत के बाद बच्चों को गुड़ वितरित किया गया । गुड़ लेने के पश्चात बच्चे घर चले गये और गांव वालों से बातचीत की गई । गांव वालों को इस शाला के शिक्षक पर पूरा भरोसा है । उनका कहना था कि पहले प्रौढ़ शिक्षा में भी इसने ईमानदारी से मेहनत की थी जिसके परिणाम स्वरूप इस केन्द्र की कुछ बच्चियों ने कक्षा पांच की परीक्षा उत्तीर्ण की है । और अब भी अच्छा काम करेगा, यह हमारा विश्वास है ।

उपरोक्त तीनों विद्यालयों का समय गांव वालों से विचार विमर्श करके सायं 6 बजे तय किया गया ।

शाम को तीनों शिक्षकों से व्यवहार संबंधी बातचीत की गई। बताया गया कि आपकी शाला में बड़ी-बड़ी बच्चियां आयेंगी । अत: आपको सावधानीपूर्वक व्यवहार करने की जरुरत है । आपका व्यवहार यदि गांव वालों को अनुचित लगता है तो बच्चियों को तत्काल भेजना बंद कर देंगे ।

21.11.96

सुबह 8.00 बजे एक साथी के साथ भोपाला गांव गया। जहां पर शिक्षक कैलाश चन्द मीणा से शाला के बारे में बातचीत की गई । कैलाश ने बताया कि मैं स्कूल का उद्घाटन आज करुंगा। 19 नवम्बर को उद्घाटन का कारण बताते हुए बताया कि मुझे सामग्री 20 नवम्बर को सुबह मिली है तथा गांव वालों ने स्कूल के लिए जगह भी नहीं दी थी। अब अपने कमरे में चलाऊंगा। कमरे को देखने पर लगा कि बीस बच्चे मुश्किल से बैठ पायेंगे पर कोई विकल्प न होने के कारण उसी में चलाने के लिए हम तीनों साथी सहमत हुए । शिक्षक ने बताया कि हमारे गांव के अधिकांश लोग शाम को शराब पीते हैं इसलिए लोग लड़कियों को शाम के वक्त शाला भेजने में आनाकानी कर रहे हैं । दिन में ये लड़कियां घर का काम करती हैं । इसी दिन शाम के वक्त मैं झांकड़ी गांव में पहुंचा। वहां पर सर्वप्रथम राम किशोर मीणा से मिला और उसके स्वास्थ्य के बारे में जाना । राम किशोर ने कहा आज मैं ठीक हूँ और आज में स्कूल का उद्घाटन करुंगा । योजना के मुताबिक 6.00 से 6.50 तक कुम्हारों के मोहल्लों की स्कूल का अवलोकन किया । शाला में 15-16 बच्चे उपस्थित थे। ताराचन्द जी ने बालगीत करवाये। साथ ही दो बालकों ने भी एक नहड़ावादी गीत प्रस्तुत किया । कविताओं के बाद अध्यापक ने बारी बारी से बच्चों से गिनती सुनी । गिनती के बाद पेड़-पौधों पर चर्चा की । इसी चर्चा के दौरान उठकर मैं कानोता की ढाणी चला गया, जहां शाला का उदघाटन हो गया था । बच्चों को बताशे बांटे जा रहे थे । बताशे लेने के बाद बच्चे व शिक्षक समूह में बैठे । मैंने बच्चों को दो बालगीत करवाये तथा बोतल का भूत कहानी सुनायी । इसी कहानी के साथ बच्चों की छुट्टी कर दी गई और मैं श्योगणों की ढाणी पहुंचा, वहां पर हरिराम मीणा बच्चों को पर्यावरण अध्ययन की गतिविधियां करवा रहा था । इस शाला में 12 बच्चे उपस्थित थे और सभी गतिविधियों में भाग ले रहे थे । बच्चों की 8.45 पर छुट्टी कर दी गई । ◆